फरीदाबाद

मजदूर समाचार

मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

* Reflections on Marx's Critique of Political Economy
* a ballad against work
* Self Activity of Wage-Workers: Towards a Critique of Representation & Delegation

The books are free

नई सीरीज नम्बर 143 मई 2000

माहौल ऐसा ही है इसलिये (9)

— व्यवहार में भुगतते हैं कि परसनल की तरह लीडरी भी मैनेजमेन्टों का एक विभाग है। फिर भी: देखो यह वाले लीडर क्या करते हैं। देखो इस बार की मैनेजमेन्ट- यूनियन मीटिंग में क्या होता है।

— व्यवहार में भुगतते हैं कि श्रम विभाग, पुलिस, अदालतों से मजदूरों को नुकसान और ठोकरें ही मिलते हैं। फिर भी : देखो इस तारीख पर क्या होता है। अफसर बदला है, नया जज आया है देखो यह क्या करता है।

— व्यवहार में भुगतते हैं कि एग्रीमेन्टें मैनेजमेन्ट के माफिक और मजदूरों के खिलाफ ही होती हैं। फिर भी: देखो इस बार एग्रीमेन्ट में क्या होता है।

— व्यवहार में भुगतते हैं कि कैजुअल- ठेकेदार के वरकरों को चार- छह महीनों में अथवा जब मर्जी होगी निकाल ही देंगे। फिर भी : देखो इस फैक्ट्री में अपना क्या होता है।

— देखते हैं बुजुर्ग मजदूरों की दुर्गत। फिर भी : देखो अपनी जिन्दगी का क्या होता है।

माहौल काफी- कुछ ऐसा ही है।

अपने कत्ल के दर्शक

"देखो क्या होता है" दर्शकों की भाषा है। यह तटस्थ लोगों की भाषा है जिनको नतीजा प्रभावित नहीं करता। लेकिन मजदूर दर्शक- तमाशबीन नहीं हैं और परिणाम हमारी जिन्दगी पर भारी असर डालते हैं। फिर भी "देखो क्या होता है" का मजदूरों के बीच व्यापक होना एक दुखद स्थिति है। यह परिणाम है उन प्रयासों का जो प्रतिनिधियों- नुमाइन्दों- लीडरों के लिये जगह बनाने के लिये किये जाते हैं। बिचौलियों का मुँह ताको और अपने ही कत्ल में दर्शक बनो, तमाशबीन बनो का प्रचार- प्रसार हमारे सिर पर बैठे करते हैं।

"देखो क्या होता है" का मन्त्र मजदूरों को हाथ पर हाथ धरे कटने के लिये इन्तजार करने का नुस्खा है।

पलटना है धारा को

अनुभव दर अनुभव है कि "देखो क्या होता है" का नतीजा हर बार मजदूरों के लिये हानिकारक ही होता है। इसलिये दर्शक- श्रोता- तमाशबीन की अकर्मण्यता उपजाती भूमिका को ठुकराना आवश्यक है।

मजदूरों का दर्शक बनना अपनी वास्तविक जिन्दगी से मुँह मोड़ना और मुँह की खाना है। इसलिये जरूरत है उसे पलटने की जो होता आया है। हमें उन कदमों के बारे में विचार- विमर्श करने की आवश्यकता है जिन्हें हम उठा सकते हैं। जो होता आया है वह नहीं हो इसके लिये हमारे द्वारा स्वयं कदम उठाना एक अनिवार्य आवश्यकता लगती है।

"देखो क्या होता है" की रट लगाये रहेंगे तो वही होगा जो होता आया है। (जारी)

एस्कोर्ट्स मजदूर : " मैनेजमेन्टों से निपटने का एक तरीका है : मुँह से हाँ जी और हाथों से नाँ जी।"

कथनी बनाम करनी

बिजली बोर्ड वरकर : "ट्रेनिंग में शिक्षा देते हैं कि 6 फुट ऊँचाई से ऊपर चालू लाइन पर काम नहीं करना। लेकिन व्यवहार में 27 से 32 फुट ऊँचाई पर चालू लाइन पर काम करना पड़ता है। वरकर कम हैं इसलिये लाइन बन्द नहीं करने देते — नियम अनुसार काम करेंगे तो समय अधिक लगेगा और अफसर इसके लिये तैयार नहीं हैं। चालू लाइनों पर काम करवाना एक्सीडेन्टों का एक बड़ा कारण है।

"ट्रेनिंग में शिक्षा यह भी देते हैं कि खम्बों पर काम लाइनमैन ही करेंगे और असिस्टेन्ट लाइनमैन सहायक ही रहेंगे। लेकिन व्यवहार में असिस्टेन्ट लाइनमैन ही खम्बों पर काम करते हैं क्योंकि लाइनमैन बनने तक वरकर बूढ़े हो जाते हैं — बीस साल से असिस्टेन्ट लाइनमैन के पद पर काम कर रहे वरकर असिस्टेन्ट लाइनमैन ही हैं।

"रबड़ के दस्ताने, टार्च, प्लास, टैस्ट लैम्प, सीढ़ी जैसे बेसिक औजार तक वरकरों को नहीं दिये जाते। इस वजह से भी एक्सीडेन्टों की सँख्या बढ़ती है।

"बिजली बोर्ड मजदूरों का जलना, 25- 30 फुट ऊँचाई से गिरना सामान्य बात बन गई है। एक्सीडेन्ट रिपोर्ट भरो तो वरकर की आफत और एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरो तो वरकर की आफत। जाँच के लिये आने वाले अधिकारियों के प्रश्न होते हैं : 'चालू लाइन पर काम क्यों कर रहे थे ? असिस्टेन्ट लाइनमैन खम्बे पर चढ़ा ही क्यों ?' छोटे अधिकारियों की कोशिश रहती है कि एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरी जाये। ऐसे में आमतौर पर घायल मजदूर को निजी नर्सिंग होम में इलाज के लिये राजी होना पड़ता है और जिन्दगी- भर के नुकसान का खतरा मोल लेना पड़ता है।"

एस्कोर्ट्स मजदूर : "मेरा 15 वर्ष का अनुभव है। फैक्ट्री में जिनके थोड़ी ज्यादा बुद्धि होती है वह लोग लीडर बन कर हमें बेवकूफ बनाते हैं और अपना घर भरते हैं।"

रफ्तार जानलेवा है

थूकने के चिकित्सकीय पहलू

डॉक्टर : "रिसर्च ने सिद्ध किया है कि मन मारने अथवा अपमानित होने पर शरीर कई प्रकार के दूषित द्रव्यों को उत्पन्न करता है। ऐसे द्रव्यों को बाहर नहीं किया जाये तो तन व मन में अनेक विकार पैदा हो जाते हैं और व्यक्ति बीमारियों से ग्रस्त हो जाती- जाता है। दूषित द्रव्यों को शरीर से बाहर करने का एक सरल व सहज तरीका थूकना है। फैक्ट्रियों और दफ्तरों में वरकरों को मन मार कर काम तो करना पड़ता ही है, कदम- कदम पर अपमानित और जलील भी होना पड़ता है। इससे हर रोज वरकरों के शरीर में अत्यन्त हानिकारक मात्रा में दूषित द्रव्य उत्पन्न होते हैं। इसलिये फैक्ट्रियों- दफ्तरों में वरकरों द्वारा थूकना उनके स्वास्थ्य के लिये निहायत जरूरी है।"

सम्पादकीय टिप्पणी : साहबों के सामने थूकना मजदूरों के लिये समस्या बढ़ा सकता है इसलिये साहबों की पीठ पीछे थूकना बनता है।

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद—121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

सावधान ! कानून हैं मैनेजमेन्टों के

कर्निता टैक्सटाइल्स मजदूर : "रोज 12 घन्टे की ड्युटी है। महीने- भर प्रतिदिन 12 घन्टे काम करने के बदले 1500 रुपये देते हैं। न ई.एस. आई. है और न फण्ड।"

एस्कोर्ट्स मेडिकल सेन्टर वरकर : "10-15 साल से लगातार काम कर रहे वरकरों को भी मैनेजमेन्ट परमानेन्ट नहीं करती। हमें ठेकेदारों के वरकरों के तौर पर रखा हुआ है।"

एमफोर्ज मजदूर : "मैनेजमेन्ट साप्ताहिक छुट्टी नहीं देती। रविवार को छुट्टी कर लेने पर दिहाड़ी काट लेती है। जबरन ओवर टाइम काम करवाती है और किसी दिन नहीं करो तो अगले दिन नौकरी छोड़ने को बोलती है।"

ए-ग्रुप सेक्युरिटी गार्ड : "नाम बदलते रहते हैं। पहले सुमित सेक्युरिटी था, फिर ए- ग्रुप सेक्युरिटी किया और इधर फिर नाम बदलने की चर्चा है। साप्ताहिक छुट्टी तक नहीं देते। महीने का वेतन मात्र 1760 रुपये।"

इन्जेक्टो मजदूर : "मार्च का वेतन 14 अप्रेल को जा कर दिया।"

जे.एम.ए. वरकर : "150 मजदूर हैं और 200 स्टाफ। मार्च का वेतन आज 18 अप्रेल तक नहीं दिया है। टूल रूम वरकरों को राहुल इन्डस्ट्रीज नामक सहयोगी कम्पनी में ट्रान्सफर कर परेशान कर रहे हैं।"

जैन डाइकास्टिंग मजदूर : "फरवरी की तनखा भी आज 17 अप्रेल तक नहीं दी है। फैक्ट्री बेचने का चक्कर है।"

जी. डब्लू .वायर वरकर : "25 तारीख के बाद तनखा देते हैं। आज 20 अप्रेल तक हमें मार्च का वेतन नहीं दिया है – स्टाफ की तो 5- 6 महीनों की तनखा बकाया है। हम 450 परमानेन्ट वरकर थे, अब 400 हैं और मैनेजमेन्ट 150 को निकालने की फिराक में है।"

सुपर स्टील मजदूर : "ठेकेदार के वरकरों का फण्ड काटते हैं पर फण्ड नम्बर बताते ही नहीं। डेढ- दो साल बाद नौकरी से निकाल देते हैं और प्रोविडेन्ट फण्ड से पैसे निकालने का फार्म भरते ही नहीं।"

इंडिया फोर्ज वरकर : "फैक्ट्री में मारुति के एक्सल, फोर्ड व महिन्द्रा ट्रैक्टरों के कई पार्ट बनते हैं। ज्यादातर मजदूर ठेकेदारों के जरिये लगा रखे हैं। ई.एस.आई. और फण्ड किसी के नहीं हैं – कम्पनी ने जिन्हें खुद लगा रखा है उनके भी नहीं हैं। चोट लगती है तब कम्पनी इलाज के पैसे भी नहीं देती – मजदूरों को अपने पैसे खर्च करने पड़ते हैं। हैल्परों को महीने का वेतन 1000 से ज्यादा नहीं देते और ऑपरेटरों को भी मात्र 1400- 1500 रुपये देते हैं। ओवर टाइम काम के पैसे डबल की बजाय सिंगल रेट से देते हैं।"

आटोपिन मजदूर : "आज तो 11 अप्रेल है – अभी मार्च का वेतन कहाँ ? मई में जा कर मैनेजमेन्ट मार्च की तनखा देगी। ब्रेक देती रहती है और जब निकालती है तब मैनेजमेन्ट हिसाब नहीं देती – 5 अप्रेल को फिर 70- 80 को नौकरी से निकाल दिया पर उन्हें हिसाब नहीं दिया है।"

डी.एस. बोइंग वरकर : "मैं, हरीश कुमार, प्लाट न. 88 सैक्टर–24 में डी.एस. बोइंग फैक्ट्री में काम करता हूँ। फैक्ट्री में 16.2.99 को मेरी उँगली कट गई। ई.एस.आई. में इलाज हुआ। डॉक्टर की फिटनेस सर्टिफिकेट ले कर गया तब मैनेजमेन्ट ने मुझे ड्युटी पर लेने से इनकार कर दिया। मैंने श्रम विभाग में शिकायत की और एक साल से वहाँ चक्कर काट रहा हूँ। सरासर गैरकानूनी हरकत के लिये मैनेजमेन्ट के खिलाफ कार्रवाई करने की बजाय श्रम अधिकारी मुझे कहता है कि नौकरी छोड़ दो और हिसाब ले लो। डी.एस. बोइंग में सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं देते – हैल्परों को महीने की तनखा 1300 रुपये ही देते हैं।"

ठेकेदार के मजदूर : "कई शिकायतें **गुडईयर** मैनेजमेन्ट को करने के बाद ठेकेदार ने जनवरी, फरवरी और मार्च महीनों की तनखायें 19 अप्रेल को जा कर हमें दी।"

कैजुअल वरकर : "दिवाली की गिफ्ट भी **इन्डीकेशन** फैक्ट्री में कैजुअलों की खा गये हैं और कहो तो निकाल देते हैं। जनवरी से बढे डी.ए. के पैसे कैजुअलों को मार्च महीने से लागू किये हैं – जनवरी व फरवरी के हमारे डी.ए.के पैसे भी खा गये हैं।"

ए.पी. इंजिनियरिंग मजदूर : "परमानेन्ट 50 और कैजुअल 350 हैं। हैल्परों को महीने के 1000 रुपये ही देते हैं। बात- बात में थप्पड़ मार देते हैं और माँ- बहन की गाली देते हैं। निकाल देते हैं तब हिसाब के लिये बहुत डोलाते हैं।"

ठेकेदार के वरकर : "न्यूनतम वेतन के 1904 की बजाय **पोलर फैन** में 1200 रुपये महीना ही देते हैं। कई वरकरों से तो दो- चार दिन काम करवा कर ठेकेदार कार्ड फाड़ देता है और उन्हें बिना कोई पैसे दिये भगा देता है।"

कादमी टूल्स, गुड़गाँव

एक मजदूर फहीम अहमद का पत्र : "मैं कादमी टूल्स प्रा. लि. गुड़गाँव में करीब 5 साल से ईमानदारी से काम करता चला आ रहा था। वरकरों ने अपनी जायज माँगें प्रबन्धकों के सामने रखने के लिये एक यूनियन बनाई जिसका रजिस्ट्रेशन न. 1586 है। प्रबन्धकों ने बदले की भावना से हम आठ- दस कर्मचारियों को कम्पनी से निकाल दिया, टरमिनेट कर दिया। बाकी वरकरों ने हम लोगों के समर्थन में हड़ताल कर दी। कम्पनी वालों ने गुण्डे बुलवा कर वरकरों को पिटवा दिया जिसकी रिपोर्ट हम लोगों ने पुलिस चौकी में लिखवाई मगर अब तक कोई कार्रवाई नहीं हुई। दिनांक 22.9.98 को हम लोगों ने अपनी शिकायत श्रम कार्यालय गुड़गाँव में दी और अपनी नौकरी बहाल करवाने के लिये उनसे प्रार्थना की मगर वहाँ भी हमें कोई इन्साफ नहीं मिला। दिनांक 3.3.99 को डी.एल.सी. महोदय गुड़गाँव ने हम सभी कर्मचारियों से कहा कि तुम लोगों का केस अब चण्डीगढ जा रहा है और वहाँ से यह केस 4- 5 महीने बाद यहाँ कोर्ट में चला आयेगा। मगर 13 महीने बीत जाने के बाद भी हमारे केस का कोई अता- पता नहीं है।"

मैनेजमेन्टों की लगाम

हर कार्यस्थल पर हजारों तार होते हैं; हजारों नट- बोल्ट होते हैं; नालियाँ- सीवर होते हैं; कई- कई ऑपरेशन होते हैं; रात- दिन को लपेटे शिफ्टें होती हैं। इसलिये मैनेजमेन्टों को रोकने- डाटने के लिये मजदूरों के हाथों में कारगर लगाम हैं: ✱ पाँच साल दौड़ने वाली मशीनें छह महीनों में टें बोल दें; ✱ कच्चा माल- तेल- बिजली उत्पादन के लिये आवश्यक मात्रा से डेढी- दुगनी इस्तेमाल हो; ✱ ऑपरेशन उल्टे- पल्टे हो कर क्वालिटी को गँगा नहा दें; ✱ बिजली कभी कड़के, कभी दमके, कभी आँख- मिचौनी करने मक्का- मदीना चली जाये; ✱ अरजेन्ट मचा रखी हो तब ऐसे ब्रेक डाउन हों कि साहबों को हृदय रोग हो जायें।

बिना किसी प्रकार की झिझक के, शान्त मन से, ठन्डे दिमाग से सोच- विचार कर कदम उठाने चाहियें।

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये

✱ अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।

✱ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये।

✱ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये- पैसे की दिक्कत है।

महीने में एक बार ही छाप पाते हैं और 5000 प्रतियाँ ही फ्री बाँट पाते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें।

कबाड़ा है क्वालिटी

आइसक्रीम ठेला वरकर : " मैं 1970 में दिल्ली आया था और पहले- पहल मैंने बेलदारी की। खर्चा पूरा नहीं पड़ता था इसलिये बेलदारी छोड़ मैंने रिक्शा चलानी शुरू की। इस से आमद तो बढी लेकिन शरीर से इतना दुर्बल हो गया कि उसके बाद से अब तक कोई भारी काम नहीं कर पाता। अब मैं क्वालिटी आइसक्रीम बेचता हूँ। अपना खाना- पीना सब इसी गाड़ी पर होता है। कपड़े भी इसी पर रखता हूँ। घर वाले क्षुब्ध रहते हैं क्योंकि मैं उन्हें कुछ भेज नहीं पाता हूँ। मानसिक रूप से काफी तनाव रहता है। मेरे दो बच्चे हैं। उनका भविष्य क्या होगा ये मेरी समझ से परे है। सच्चाई आज तक समझ में नहीं आई। मेहनत करने से कुछ नहीं होता इसका मुझे अच्छा अनुभव है। ये दुनियाँ सिर्फ बड़े लोगों की है। गरीब इस दुनियाँ में कोई अहमियत नहीं रखते। देखिये, कबाड़ा जिन्दगी है और क्वालिटी बेचता हूँ।"

और बातें यह भी

हिन्दुस्तान वायर मजदूर : "वायर डिविजन से पहले तो एल पी जी में ट्रान्सफर किया और फिर मैनेजमेन्ट कहने लगी कि जहाँ 2 मजदूर 340 का उत्पादन देते थे वहाँ एक वरकर 400 का उत्पादन दे। दरअसल थ्री एस एस नाम से मैनेजमेन्ट ने कैजुअलों में एक कैटेगरी बनाई थी और 10- 12 साल लगातार काम करने पर 2- 3 को इनमें से हर साल परमानेन्ट करती थी। अब इन थ्री एस एस मजदूरों को निकालने के लिये इस प्रकार उत्पादन में ऊल- जलूल वृद्धि माँग रही है। लिखित स्वीकृति पर मैनेजमेन्ट जोर दे रही है और आनाकानी पर गेट रोक रही है।"

एस्कोर्ट्स वरकर : "फस्ट प्लान्ट की शॉकर डिविजन में पीने के पानी में थिनर मिक्स हुआ — कहीं टैंक लीक हुआ था। हम तीन दिन शिकायतें करते रहे पर पानी से थिनर की बदबू नहीं गई। गर्मी में प्यास से परेशान मजदूर तब ए.वी.पी. के पास गये तो बड़े साहब बोले कि मेरे पास क्यों आये हो, वापस जाओ। ए.वी.पी. से रूबरू को भी तीन दिन हो गये हैं पर पानी बदबू मार रहा है। हाँ, परेशान करने में मैनेजमेन्ट कोई कसर नहीं छोड़ रही। नौकरी छोड़ने को मजबूर करने के लिये वरकरों का फिर ट्रान्सफर शुरू किया हुआ है। ऐसी जगह ट्रान्सफर करते हैं जहाँ जाने से मजदूर इनकार करे और फिर 'काम नहीं, वेतन नहीं' के नोटिस मैनेजमेन्ट लगाती है।"

ईस्ट इंडिया मजदूर : " मैं, राम सागर, पावरलूम में काम करता था। फर्जी आरोप- पत्र द्वारा 1992 में मुझे नौकरी से निकाल दिया। पूरे 8 साल बाद 10.6.99 को लेबर कोर्ट ने मेरे हक में फैसला दिया। लेकिन इधर भी एक साल होने को है और अदालत के निर्णय के बावजूद मुझे कुछ भी नहीं मिला है। अच्छा तमाशा है कि मजदूर को गोली- चाकू मत मारो बल्कि कोर्ट केस को लम्बा करा कर थोड़ा- थोड़ा करके रोज मारो।"

जरूरी हैं विकल्प

कोको वायर मजदूर : "मार्च का वेतन आज 14 अप्रेल तक नहीं दिया है। नोटिस लगा रखा है कि 50 वर्ष से ऊपर आयु वाले मजदूर इस्तीफे दें। निचोड़ो और फेंको वाली बात है। नौकरी छोड़ने पर क्या खायेंगे ? कहाँ से खायेंगे ?"

हैदराबाद इन्डस्ट्री ज वरकर : "स्टाफ के लिये मैनेजमेन्ट ने वी.आर. एस. का नोटिस लगा दिया है। अब मजदूरों पर भी यह बला आयेगी। वी.आर.एस. की महामारी पूरे फरीदाबाद में छा गई है। अब आगे से पूरी ठेकेदारी चलेगी। क्या समय आ गया है! हमारी जिन्दगी तो गई, बच्चों का क्या होगा ?"

टालब्रोस मजदूर : " हमारे प्लान्ट से 50 मशीनें उखाड़ कर एक नया प्लान्ट खोला है जहाँ टोटल ठेकेदारी है। आँखें फाड़े देखते रहते हैं — नौकरी की चिन्ता बढ़ गई है। अपनी- अपनी ही सोचेंगे, परमानेन्ट को ही देखेंगे तो सब मारे जायेंगे। परमानेन्ट, कैजुअल और ठेकेदारों के वरकरों के बीच चर्चाओं से ही राहें निकलेंगी।"

कैजुअल वरकर : " जहाँ भी काम करते हैं वहाँ से एक- डेढ साल बाद निकाल देते हैं। श्रम विभाग में इसके खिलाफ जाओ तो वहाँ उनकी मन्थली बँधी है, कुछ नहीं होता। यूनियनें कुछ करती ही नहीं। मजदूर कहाँ जायें? इन कम्पनियों का मजदूर क्या- कुछ कर सकते हैं ?"

जे.वी. इलेक्ट्रोनिक्स मजदूर : " 500 की जगह अब 122 ही परमानेन्ट वरकर बचे हैं। पिछली वी.आर. एस. 1998 में लगा कर 72 परमानेन्ट निकाले और फिर 40- 45 कैजुअल रख लिये। अब पहली अप्रेल से लगाई वी.आर. एस. से मैनेजमेन्ट हम 122 में से 35- 40 को निकालना चाहती है। नौकरी छोड़ने के लिये दबाव का एक अत्यन्त दुखद परिणाम महिला मजदूर श्रीमती बिमला की मृत्यु रहा है। श्रीमती बिमला के मृत्युपूर्व बयानों से बुरी तरह फँसी मैनेजमेन्ट ने सब मजदूरों से हस्ताक्षर करवाये हैं कि 15- 20 साल से मैनेजमेन्ट और मजदूरों के बीच सम्बन्ध अच्छे हैं, कोई तनाव नहीं है। सम्बन्ध खाक अच्छे हैं .... डिपार्टवाइज सुपरवाइजरों ने कागज पर हस्ताक्षर करवाये।"

एस्कोर्ट्स वरकर : "क्या बतायें ? यामाहा राजदूत में 10 मिनट में चाय पीने 100 मजदूर टेबल पर जायें, सब चाय लें — समोसे लें। पीयें न पीयें, दस मिनट में वापस कनवेयर पर पहुँचें। लन्च में इससे भी बुरा — कैन्टीन दूर है और आधे घण्टे के अन्दर हजार लोगों के साथ खाना खा कर कनवेयर पर वापस पहुँचें!"

टेकमसेह मजदूर : " 5 मार्च को कम्पनी में तालाबन्दी के बाद हर तीसरे- चौथे दिन मैनेजमेन्ट हर मजदूर को डाक से एक 'संदेश' भेज रही है। तालाबन्दी को दो महीने भी नहीं हुये हैं और मैनेजमेन्ट 15 'संदेश' छाप चुकी है। जनवरी 99 की एग्रीमेन्ट के अर्थ मैनेजमेन्ट अब हमें समझा रही है। और देखिये, 2 मई के वी.आर.एस. 'संदेश' में मैनेजमेन्ट कह रही है कि आत्मनिर्भरता के सर्वोपरि लाभ के लिये मजदूर नौकरी छोड़ दें! दरअसल, वर्क लोड में भारी वृद्धि और बड़े पैमाने पर छँटनी वाली सैटलमेन्ट के लिये मैनेजमेन्ट माहौल बना रही है। देर- सबेर होने वाली ऐसी मैनेजमेन्ट- यूनियन सैटलमेन्ट को फेल करना हम मजदूरों के लिये वास्तव में सर्वोपरि लाभ की बात होगी। नहीं चाहिये हमें प्रतिस्पर्धा का यह दौर जिसमें छँटनी- वेतन बिल में कटौती- वर्क लोड में वृद्धि ही मजदूरों के हिस्से में हैं।"

झालानी टूल्स वरकर : "नौकरी करते 30 साल हो गये। मैनेजमेन्ट ने हमारे प्रोविडेन्ट फण्ड के पैसे जमा नहीं करवाये हैं। रिटायर हुओं को सर्विस- ग्रेच्युटी के पैसे नहीं दिये हैं। कटी- कुटी तनखा भी जनवरी माह से नहीं दी है, मजदूरों की 25 महीनों की तनखायें बकाया हो गई हैं। स्टाफ की 28 महीनों की तनखायें नहीं दी हैं। बोनस- एल टी ए- वर्दी- जूते तो याद भी नहीं रहा कि कितने साल से नहीं दिये हैं। ऊपर से फैक्ट्री में गुण्डागर्दी का यह आलम है कि इस उमर में भी कई मजदूरों को कोरे कागजों पर दस्तखत करने पड़े हैं। न्याय की यहाँ कहीं भी सुनवाई नहीं है।"

एस्कोर्ट्स मजदूर : "3 अप्रेल को फार्मट्रैक प्लान्ट में नये हॉल की नींव में ठेकेदार के दो मजदूर दब गये जिनमें से एक की मृत्यु हो गई। अस्पताल में गहन चिकित्सा कक्ष में भर्ती है कह कर मौत की बात को मैनेजमेन्ट ने गोल कर दिया ताकि मजदूरों में रोष नहीं फैले। हाँ, ठेकेदारों के मजदूरों को अब टोप पहना दिये हैं।"

जे.वी. इलेक्ट्रोनिक्स वरकर : "7 अप्रेल को फैक्ट्री में जली महिला मजदूर बिमला देवी की 11 अप्रेल को सफदरजंग अस्पताल में मृत्यु हो गई। यहाँ बी.के. अस्पताल और दिल्ली में सफदरजंग, दोनों जगह मृत्युपूर्व के अपने बयान में श्रीमती बिमला ने कहा कि एग्जेक्युटिव डायरेक्टर, जनरल मैनेजर, प्लान्ट मैनेजर और परसनल अफसर ने पकड़ कर उसे आग लगा दी क्योंकि वह इस्तीफा देने से इनकार कर रही थी। मैनेजमेन्ट ने मजदूरों को नौकरी से निकालने के लिये पहली अप्रेल से फिर वी. आर. एस. लगाई है। जे.वी. इलेक्ट्रोनिक्स में ज्यादातर मजदूर महिलायें हैं।"

चन्दा इन्टरप्राइजेज मजदूर : "8 अप्रेल को क्रेन से बोझा उदय के ऊपर गिरा और उनकी मृत्यु हो गई। 15 साल की सर्विस वाले परमानेन्ट वरकर उदय की मौत के बाद मैनेजमेन्ट ने क्रेनों की जाँच कर इस्तेमाल करो के आदेश दिये हैं।"

क-ख-ग 1

विश्व के कई क्षेत्रों में हिसाब लगाने पर यह जानकारी उभरी है :

मजदूर अपनी दिहाड़ी के बराबर उत्पादन बीस से चौबीस मिनट काम के द्वारा कर देते हैं। प्रतिदिन 20 मिनट काम करने के बाद मजदूर जो काम करते हैं वह मजदूरों की और रेल बनाने के लिये इस्तेमाल होता है।

कोठियों के परदों में

घरेलू नौकर : " 1984 में नेपाल से दिल्ली आया तब मैं 15 वर्ष का था। मेरे गाँव वाले ने मुझे लाजपतनगर में एक कोठी पर लगवा दिया। मुझे 24 घण्टे कोठी पर रहना – बाहर जाने का समय सिर्फ सुबह- शाम कुत्ते को घुमाने के लिये मिलता था। कोठी के अन्दर सारी चीजें हैं – टी.वी. हैं, टेप हैं, फ्रिज हैं, ए.सी. हैं, फ्रूट- सब्जियाँ हैं लेकिन मेरे लिये ये सब जानलेवा हैं। इनकी देख- भाल और रख- रखाव में मेरी जान को आन पड़ती है। ऊपर से खाना बनाना, कपड़े धोना, पोचा लगाना, रूम साफ करना, कुत्ते को बहलाना, जूते- चप्पल साफ करना। मुझे यह करते 16 साल हो गये। पहले तो रात को कोठी अन्दर से बन्द कर मुझे बाहर बरामदे में सुलाते थे पर अब मुझे कुत्ते के साथ अन्दर ही जगह दी हुई है। रात को साहब शराब पीते हैं और मुझे उनकी मालिश करनी पड़ती है। रात दो बजे जा कर सोने देते हैं – नींद आने पर वे गाली देते हैं, कभी- कभी मार भी देते हैं। मेरे सम्बन्धी भी मुझ से कम ही मिलने आते हैं – घर वालों को तो बस पैसे चाहियें। मैं मानवीय व्यवहार भूलता जा रहा हूँ। अब जब- तब साहब अपना सामान उठाने, पानी पिलाने के लिये मुझे कार में अपने साथ ले जाते हैं। ड्राइवर साहब, आप ने इन्सान की तरह मुझ से बात की है वरना मैं तो कुत्ते के साथ अपना मन बहलाता हूँ।"

मनौती

एक मजदूर : " सुपरवाइजर ने ओवर टाइम पर रुकने को कहा तो मैंने मना कर दिया। सुपरवाइजर जोर देने लगा तो मैंने कहा आप जानते ही हैं कि मैं रोज सुबह- शाम नहा कर भगवान की धूपबत्ती करता हूँ। फिर सुपरवाइजर को सुना कर मैंने कहा कि रोज सुबह- शाम प्रार्थना करते समय मैं भगवान से यही माँगता हूँ कि जिस कम्पनी ने हमारी रेल बना रखी है उसे बन्द कर दे तो सुपरवाइजर चौंक कर बोला, 'हैं! क्या कह रहे हो?' और फिर मुझे ओवर टाइम के लिये नहीं बोला। वैसे मैंने तीन साल से धूपबत्ती करनी छोड़ दी है। जब हमारे कष्ट- परेशानियाँ घटने की बजाय और बढ रहे हैं तो धूपबत्ती किसलिये करें?"

सीख रहे हैं, समझ रहे हैं

टेकमसेह मजदूर : "फैक्ट्री में तालाबन्दी के बाद मैनेजमेन्ट ने 125 महिला मजदूरों को 9 सैक्टर में खोले ऑफिस में बुलाया और इस्तीफे देने को कहा। इस पर महिला वरकरों ने साफ- साफ कह दिया कि नौकरी नहीं छोड़ेंगी – मैनेजमेन्ट की जो मर्जी हो कर ले।"

स्काईटोन केबल्स वरकर : " लफड़ा है। एग्रीमेन्ट क्या है पूरा जँजाल है। डी.ए. व वार्षिक इनक्रीमेन्ट बन्द कर पैकेज का जाल मैनेजमेन्ट ने फैलाया है।"

ईस्ट इंडिया कॉटन मिल मजदूर : "हम लोग कई यूनियनों को लाये। उन्होंने एक से बढ कर एक आश्वासन दिये। हमने उन पर भरोसा किया और यह हमारी गलती रही है। जगह- जगह यूनियनों द्वारा किये जाते करमों के समाचार पढ कर खून खौल जाता है। ईस्ट इंडिया वरकर आज दर- दर मारे फिर रहे हैं।"

इंडियन गैरेज वरकर : "आपस में बातचीत में सावधानी बरतनी जरूरी है। देखने में आया है कि जो बातें हम आपस में करते हैं उन्हें कुछ लोग मैनेजमेन्ट के पास पहुँचा देते हैं। बढ़- चढ़ कर बोलना गड़बड़ है। हम से जितनी राशि पर हस्ताक्षर करवाती है उतने पैसे मैनेजमेन्ट नहीं देती। कैजुअल और ठेकेदारी प्रथा बढाने के लिए मैनेजमेन्ट परेशान करती है ताकि परमानेन्ट मजदूर नौकरी छोड़ दें।"

एस्कोर्ट्स मजदूर : "14 अप्रेल से मैनेजरों ने टाइम नोट करने शुरू किये। डिपार्टमेन्टों के अन्दर लाइन मैनेजरों ने कागज काले किये: 8 की बजा। 8 बज कर 4 मिनट पर फलाँ मशीन और 8 बज कर 6 मिनट पर फलाँ मशीन चालू की, 12 की बजाय 11.55 पर लन्च के लिये हाथ धोने को मशीनें बन्द की, चाय के लिये 2 मिनट पहले फलाँ मशीन बन्द की और डेढ़ मिनट बाद फलाँ चालू की .....। इस तरह के नोट बनवा कर मैनेजमेन्ट ने टाइम लॉस कर रहे हो, आई.ई.नोर्म्स के अनुसार काम नहीं कर रहे हो कह कर नोटिस लगा कर 'परामर्श' देने शुरू किये। मैनेजमेन्ट यह जानबूझ कर पँगे लेने के लिये कर रही है क्योंकि अभी ज्यादा उत्पादन की जरूरत है ही नहीं। इस पर हम मजदूरों ने खूब सूझबूझ दिखाई है: ऐसे करना शुरू किया कि जो 8 बजे डिपार्टमेन्ट में पहुँचता है वह सब की मशीनों के मेन ऑन करके साइकिल टाइम स्टार्ट कर देता है। मैनेजर पूछता है कि वरकर कहाँ है तो – 'पेशाब करने गया है'। वरकरों द्वारा खाली मशीन चलाने को देख कर मैनेजमेन्ट ढीली पड़ी है – मैनेजरों ने टाइम नोट करने में रस्म निभानी शुरू कर दी है।"

स्टड्स हेल्मेट वरकर : " मार्च की तनखा आज 14 अप्रेल तक नहीं दी है। मैनेजमेन्ट कहती है कि पैसे नहीं हैं। प्लाट नम्बर 21 बेचने और कट- कमीशन खाने के चक्कर में है। अभी खोल कर नहीं कह रहे पर वी.आर.एस. लगा कर मजदूरों को नौकरी से निकालने का लफड़ा है।"

<u>विकल्पों के लिये प्रश्न (9)</u>

ऊँच-नीच में रक्तबीज है काम

काम कष्टदायक होता है। इसलिये काम के प्रति सहज व स्वाभाविक विरोध होता है। काम का बोझ कम करने के लिये हम अनेकानेक तरीके अपनाते हैं।

लकड़ी- पत्थर के औजार हों तब भी अपने लिये आवश्यक काम की मात्रा सीमित होती है। अपने रहन- सहन के तौर- तरीके बदल कर हम इसे और कम कर सकते हैं।

लेकिन ऊँच- नीच की समाज व्यवस्था में मेहनतकशों के लिये काम की कोई सीमा नहीं रहती। स्वामियों, राजा- सामन्तों और पूँजीपतियों- कम्पनियों के लिये काम जितना ज्यादा करो उतना ही बढ़ता जाता है। काम से काम समाप्त होना तो दूर, कम भी नहीं होता बल्कि बढता जाता है। रक्तबीज बन जाता है काम।

अपने लिये तो काम कष्टदायक है ही, दबाव में दूसरों के लिये काम करने से होती पीड़ा तो असहनीय है। इसलिये दासों, भूदासों, मजदूरों से काम करवाने के लिये दमनतन्त्रों का विकास। संग- संग ऊँच- नीच में रचे- बसे संस्कार व संस्कृति की शिक्षा- दीक्षा है: "कर्म पूजा है"; "काम से बोझ- परेशानी कम होते हैं"; "बेहतर जीवन के लिये अधिक काम करो"; "काम का होता फल मीठा"; आदि- आदि।

संस्कार- संस्कृति- शिक्षा- दीक्षा- प्रचार- प्रसार काम के प्रति श्रद्धा, काम में जीने का मकसद देखना, काम तो करना ही चाहिये आदि भावनाओं को पैदा करने के प्रयास करते हैं। नतीजतन "काम से तसल्ली होती है", "काम में मजा आता है" जैसे बेतुके दावे भी सुनने को मिलते हैं।

आज काम की प्रक्रिया कम्पनी- सरकार- संस्था तय करती हैं। क्या करना है, कब करना है, कितना करना है, किस गति से करना है यह कम्पनी- सरकार- संस्था तय करती हैं। हम जो उत्पादन करते हैं उसका क्या प्रयोग होगा यह कम्पनी- सरकार- संस्था तय करती हैं। हाँ, हमारे द्वारा किये जाते उत्पादन हमारे खिलाफ खड़े तन्त्रों को मजबूत करते हैं।

ऐसे में काम में मन लगाने के हमारे प्रयास अपने खुद के पैरों पर कुल्हाड़ी मारने की हमारी कोशिशें हैं।

यातना है काम और मानवद्रोही है रक्तबीज रूपी काम। इस हकीकत से निगाहें मिलाना जरूरी है। काम का विरोध वर्तमान की कालकोठरी में दरार डालना है। काम कम करने के तरीकों पर चर्चायें विकल्पों के लिये एक प्रस्थान- बिन्दू है। (जारी)

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी. फरीदाबाद–121001

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन **L/HR/FBD/73**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।